

## रहरासि साहिब

1 ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः 1 ॥

दुखु दारु सुखु रोगु भइआ

जा सुखु तामि न होई ॥

तूं करता करणा मै नाही

जा हउ करी न होई

॥ 1 ॥

बलिहारी कुदरति वसिआ ॥

तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

जाति महि जोति जोति महि जाता अकल

कला भरपूरि रहिआ ॥

तूं सचा साहिबु सिफति सुआलिउ जिनि

कीती सो पारि पइआ ॥

कहु नानक करते कीआ बाता

जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ 2 ॥

सो दरु रागु आसा महला १

1 औं सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा

जितु बहि सरब समाले ॥

वाजे तेरे नाद अनेक असंखा

केते तेरे वावणहारे ॥

केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते  
तेरे गावणहारे ॥

गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु

गावै राजा धरमु दुआरे ॥

गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि

लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥

गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि

तेरे सदा सवारे ॥

गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि

बैठे देवतिआ दरि नाले ॥

गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि  
तुधनो साध बीचारे ॥

गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि  
तधुनो वीर करारे ॥

गावनि तुधनो पंडित पड़नि  
रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥

गावनि तुधनो मोहणीआ  
मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥

गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि  
तीरथ नाले ॥

गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा  
गावनि तुधनो खाणी चारे ॥

गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रह्मंडा  
करि करि रखे तेरे धारे ॥

सई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि  
रते तेरे भगत रसाले ॥

होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति  
 न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥  
 सोई सोई सदा सचु साहिबु  
 साचा साची नाई ॥  
 है भी होसी जाइ न जासी  
 रचना जिनि रचाई ॥  
 रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ  
 जिनि उपाई ॥  
 करि करि देखै कीता आपणा  
 जिउ तिस दी वडिआई ॥  
 जो तिसु भावै सोई करसी  
 फिरि हुकम्मु न करणा जाई ॥  
 सो पतिसाहु साहा पतिसाहिबु  
 नानक रहणु रजाई ॥1॥

आसा महला ९ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥

केवडु वडा डीठा होइ ॥

कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥

कहणै वाले तेरे रहे समाइ

॥ १९ ॥

वडे मेरे साहिबा गहिर

गंभीरा गुणी गहीरा ॥

कोइ न जाणै तेरा

केता केवडु चीरा ॥ १९ ॥ रहाउ ॥

सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥

सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥

गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥

कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥ २ ॥

सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ

सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥

तुधुविणु सिधी किनै न पाईआ

करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥ ३ ॥

आखण वाला किआ वेचारा ॥  
 सिफती भरे तेरे भंडारा ।।  
 जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥  
 नानक सचु सवारणहारा ॥ ४ ॥ २ ॥

आसा महला ॥ १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥  
 आखणि अउखा साचा नाउ ॥  
 साचे नाम की लागै भूख ॥  
 उत्तु भूखै खाइ चलीअहि दूख  
 सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ ॥ १ ॥  
 साचा साहिबु साचै नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥

साचे नाम की तिलु वडिआई ॥

आखि थके कीमति नही पाई ॥

जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥

वडा न होवै घाटि न जाइ ॥ २ ॥

ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥  
 देदा रहै न चूकै भोगु ॥  
 गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥  
 ना को होआ ना को होइ ॥ 3 ॥  
 जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥  
 जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥  
 खसमु विसारहि ते कमजाति ॥  
 नानक नावै बाझु सनाति ॥ 4 ॥ 3 ॥

### रागु गुजरी महला 4 ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा  
 बिनउ करउ गुर पासि ॥  
 हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई  
 करि दझआ नामु परगासि ॥ 1 ॥  
 मेरे मीत गुरदेव  
 मो कउ राम नामु परगासि ॥

गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई

हरि कीरति हमरी रहरासि ।

॥ 1 ॥

रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे

जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥

हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि

मिलि संगति गुण परगासि

॥ 2 ॥

जिन हरि हरि हरि रसु नामु न

पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥

जो सतिगुर सरणि संगति नही आए

घिगु जीवे घिगु जीवासि

॥ 3 ॥

जिन हरि जन सतिगुर

संगति पाई तिन धुरि मस्तकि लिखिआ

लिखासि ॥

धनु धनु सत संगति जितु हरि रसु पाइआ

मिलि जन नानक नामु परगासि

॥ 4 ॥

## रागु गूजरी महला 5 ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु  
 जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥  
 सैल पथर महि जंत उपाए  
 ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥ 1 ॥  
 मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ।  
 गुर परसादि परम पदु पाइआ  
 सूके कासट हरिआ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥  
 जननि पिता लोक सुत बनिता  
 कोइ न किस की धरिआ ॥  
 सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु  
 काहे मन भउ करिआ ॥ 2 ॥  
 उडे ऊडि आवै सै कोसा  
 तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥  
 तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै  
 मन महि सिमरनु करिआ ॥ 3 ॥

सभि निधान दस अस्ट सिधान  
 ठाकुर कर तल धरिआ ।।  
 जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ  
 तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

रागु आसा महला 4 सो पुरखु  
 1 औ सतिगुर प्रसादि ॥  
 सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि  
 अगमा अगम अपारा ॥  
 सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी  
 हरि सचे सिरजणहारा ॥  
 सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ।  
 हरि धिआवहु संतहु जी  
 सभि दूख विसारणहारा ॥  
 हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी  
 किआ नानक जंत विचारा ॥१॥

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि  
 एको पुरखु समाणा ॥  
 इकि दाते इकि भेखारी जी  
 सभि तेरे चोज विडाणा ॥  
 तूं आपे दाता आपे भुगता जी  
 हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥  
 तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी  
 तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥  
 जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी  
 जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥ 2 ॥  
 हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी  
 से जन जुग महि सुखवासी ॥  
 से मुकतु से मुकतु भए  
 जिन हरि धिआइआ जी  
 तिन तूटी जम की फासी ॥

| जिन निरभउ जिन हरि निरभउ  
 | धिआइआ जी तिन का भउ समु गवासी ॥  
 | जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि  
 | जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥  
 | से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी  
 | जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥  
 | तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी  
 | भरे बिअंत बेअंता ॥  
 | तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी  
 | हरि अनिक अनेक अनंता ॥  
 | तेरी अनिक तेरी अनिक करहि  
 | हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥  
 | तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति  
 | सासत जी करि किरिआ खटु करम करता  
 | से भगत से भगत भले जन नानक जी  
 | जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥ ४ ॥

तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी

तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥

तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी

तूं निहचलु करता सोई ॥

तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं

आपे करहि सु होई ॥

तुधु आपे स्निसटि सभ उपाई जी

तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥

जनु नानकु गुण गावै करते के जी

जो सभसै का जाणोई ॥ 5 ॥ 1 ॥

आसा महला 4 ॥

तूं करता सचिआरु मैडा साई ॥

जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि

सोई हउ पाई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥  
 जिस नो क्रिपा करहि  
 तिनि नाम रतनु पाइआ ॥  
 गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥  
 तुधु आपि विछुड़िआ आपि मिलाइआ ॥ 1 ॥  
 तुं दरीआउ सभ तुझ्ह ही माहि ॥  
 तुझ्ह बिनु दूजा कोई नाहि ॥  
 जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥  
 विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥ 2 ॥  
 जिस नो तूं जाणाइहि सोई जनु जाणै  
 हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥  
 जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥  
 सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ 3 ॥  
 तूं आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥  
 तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥

तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥

जन नानक गुरमुखि परगदु होइ । 4 । 2 ॥  
आसा महला 1 ॥

तितु सरवरड़े भईले निवासा

पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥

पंकजु मोह पगु नही चालै

हम देखा तह ढूबीअले ॥ 1 ॥

मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥

हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥ । रहाउ ॥

ना हउ जती सती नही पड़िआ

मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥

प्रणवति नानक तिन की सरणा

जिन तू नाही वीसरिआ ॥ 2 ॥ 3 ॥

आसा महला 5 ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥

गोविंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥

अवरि काज तेरै कितै न काम ॥  
 मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥॥1॥  
 सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥  
 जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥॥1॥

रहाउ ॥

जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥  
 सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥  
 कहु नानक हम नीच करंमा ॥  
 सरणि परे की राखहु सरमा ॥॥2॥4॥  
 1 ओ स्त्री वाहिगुरु जी की फतह ॥  
 पातसाही 10 ॥ चौपई ॥  
 पुनि राघस का काटा सीसा ॥  
 स्त्री असिकेतु जगत के ईसा ॥  
 पुहपन ब्रिसटि गगन ते भई ॥  
 सभहिन आनि बधाई दई

धन्य धन्य लोगन के राजा ॥  
 दुस्टन दाह गरीब निवाजा ॥  
 अखल भवन के सिरजनहारे ॥  
 दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥ २ ॥

कबियो बाच बेनती ॥ चौपई ॥  
 हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥  
 पूरन होइ चित की इच्छा ॥  
 तव चरनन मन रहै हमारा ॥  
 अपना जान करो प्रतिपारा ॥ १ ॥  
 हमरे दुस्ट सभै तुम घावहु ॥  
 आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥  
 सुखी बसै मोरो परिवारा ॥  
 सेवक सिक्खय सभै करतारा ॥ २ ॥  
 मो रच्छा निजु कर दै करियै ॥  
 सभ बैरन कौ आज संघरियै ॥

पूरन होइ हमारी आसा ॥  
 तोर भजन की रहै पिआसा ॥ 3 ॥  
 तुमहि छाडि कोई अवर न ध्याऊँ ॥  
 जो बर चहों सु तुम ते पाऊँ ॥  
 सेवक सिक्खय हमारे तारीअहि  
 चुनि चुनि सत्र हमारे मारीअहि ॥ 4 ॥  
 आप हाथ दै मुझै उबरियै ॥  
 मरन काल का त्रास निवरियै ॥  
 हूजो सदा हमारे पच्छा  
 स्त्री असिधुज जू करियहु रच्छा ॥ 5 ॥  
 राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥  
 साहिब संत सहाइ पियारे ॥  
 दीन बंधु दुस्टन के हंता ॥  
 तुमहो पुरी चतुरदस कंता ॥ 6 ॥  
 काल पाइ ब्रह्मा बपु धरा ॥  
 काल पाइ सिवजू अवतरा ॥

काल पाइ करि बिसनु प्रकासा ॥  
 सकल काल का कीआ तमासा ॥ 7 ॥  
 जवन काल जोगी सिव कीओ ॥  
 बेद राज ब्रह्मा जू थीओ ॥  
 जवन काल सभ लोक सवारा ॥  
 नमसकार है ताहि हमारा ॥ 8 ॥  
 जवन काल सभ जगत बनायो ॥  
 देव दैत जच्छन उपजायो ॥  
 आदि अंति एके अवतारा ॥  
 सोई गुरु समझियहु हमारा ॥ 9 ॥  
 नमसकार तिसही को हमारी ॥  
 सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥  
 सिवकन को सवगुन सुख दीओ ॥  
 सत्त्वन को पल मो बध कीओ ॥ 10 ॥  
 घट घट के अंतर की जानत ॥

भले बुरे की पीर पछानत ॥  
 चीटी ते कुंचर असथूला ॥  
 सम पर कृपा द्रिस्टि करि फूला ॥11॥  
 संतन दुख पाए ते दुखी ॥  
 सुख पाए साधन के सुखी ॥  
 एक एक की पीर पछानै ॥  
 घट घट के पट पट की जानै ॥12॥  
 जब उदकरख करा करतारा ॥  
 प्रजा धरत तब देह अपारा ॥  
 जब आकरख करत हो कबहुँ ॥  
 तुम मैं मिलत देह धर सभहुँ ॥13॥  
 जेते बदन सृस्टि सभ धारै ॥  
 आपु आपनी बूझ उचारै ॥  
 तुम सभ ही ते रहत निरालम ॥  
 जानत बेद भेद अर आलम ॥14॥

निरंकार त्रिविकार त्रिलंभ ॥  
 आदि अनील अनादि असंभ ॥  
 ता का मूढ़ उचारत भेदा ॥  
 जा कौ भेव न पावत बेदा ॥ 15 ॥  
 ता कौ करि पाहन अनुमानत ॥  
 महा मूढ़ कछु भेद न जानत ॥  
 महांदेव कौ कहत सदा सिव ॥  
 निरंकार का चीनत नहि भिव ॥ 16 ॥  
 आपु आपनी बुधि है जेती ॥  
 बरनत भिन्न भिन्न तुहि तेती ॥  
 तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥  
 किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥ 17 ॥  
 एकै रूप अनूपा सरुपा ॥  
 रंक भयो राव कही भूपा ॥  
 अंडज जेरज सेतज कीनी ॥  
 उत्तमुज खानि बहुरि रचि दीनी ॥ 18 ॥

कहूं फूलि राजा हवै बैठा ॥  
 कहूं सिमिट भयो संकर इकैठा ॥  
 सगरी सृसटि दिखाइ अचंभव  
 आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥ ॥19 ॥

अब रच्छा मेरी तुम करो ॥  
 सिक्खय उबारि असिक्खय संघरो ॥  
 दुस्ट जिते उठवत उतपाता ॥

सकल मलेछ करो रण धाता ॥ ॥20 ॥  
 जे असिधुज तव सर्नी परे ॥

तिन के दुस्ट दुखित हवै मरे ॥  
 पुरख जवन पग परे तिहारे ॥

तिन के तुम संकट सभ टारे ॥ ॥21 ॥  
 जो कलि को इक बार धिए है ॥

ता के काल निकटि नहि ऐहै ॥  
 रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥

दुस्ट अरिस्ट टरें ततकाला ॥ ॥22 ॥

क्रिपा द्रिस्ति तन जाहि निहरिहो ॥

ता के ताप तनक मों हरिहो ॥

रिधि सिधि घर मो सभ होई ॥

दुस्ट छाह छवै सकै न कोई ॥ ॥ 23 ॥

एक बार जिन तुमै संभारा ॥

काल फास ते ताहि उबारा ॥

जिन नर नाम तिहारो कहा ॥

दारिद दुस्ट दोख ते रहा ॥ ॥ 24 ॥

खड़गकेत मै सरणि तिहारी ॥

आप हाथ दै लेहु उबारी ॥

सरब ठौर मो होहु सहाई ॥

दुस्ट दोख ते लेहु बचाई ॥ ॥ 25 ॥

क्रिपा करी हम पर जग माता ॥

ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥

किलबिख सकल देह को हरता ॥

दुस्ट दोखियन को छै करता ॥ ॥ 26 ॥

स्त्री असिधुंज जब भए दइआला ॥  
 पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥  
 मन बांछत फल पावै सोई ॥  
 दूख न तिसै बिआपत कोई ॥ 26 ॥  
 अडिल्ल ॥

सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई ॥  
 सुनै मूळ चित लाइ चतुरता आवई ॥  
 दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥  
 हो जो याकी एक बार चौपई को कहै । 28 ।  
 चौपई ॥ संबत सन्नव सहस भणिज्जै ॥  
 अरध सहस फुनि तीनि कहिज्जै ॥  
 भाद्रव सुदी असटमी रवि वारा ॥  
 तीर सतुद्रव ग्रंथ सुधारा ॥ 29 ॥  
 इति स्त्री चरित्रो पखयाने त्रिया चरित्रे  
 मंत्री भूप संबादे चार सौ पांच चरित्र  
 समापत्तम सतु सुभम सतु ॥ 1 ॥

अफजूँ ॥

दोहरा ॥ दास जान करि दास परि कीजै  
क्रिपा अपार ॥

आप हाथ दै राखु मुहि  
मन क्रम बचन बिचार

॥ 1 ॥

चौपई ॥

मै न गनेसहि प्रिथम मनाऊँ ॥

किसन बिसन कबहूँ नहि धिआऊँ ॥

कान सुने पहिचान न तिन सो ॥

लिव लागी मोरी पग इन सो ॥ 2 ॥

महा काल रखवार हमारो ॥

महा लोह मै किंकर थारो ॥

अपना जान करो रखवार ॥

बाँहि गहे की लाज बिचार ॥ 3 ॥

अपना जान मुझै प्रतिपरीऐ ॥

चुन चुन सत्रु हमारे मरीऐ ॥

देग तेग जग मै दोऊ चलै ॥  
 राख आप मुहि अउर न दलै ॥ 4 ॥  
 तुम मम करहु सदा प्रतिपारा ॥  
 तुम साहिब मै दास तिहारा ॥  
 जान आपना मुझै निवाज ॥  
 आप करो हमरे सभ काज ॥ 5 ॥  
 तुम्हो सभ राजन के राजा ॥  
 आपे आपु गरीब निवाजा ॥  
 दास जान कर क्रिपा करहु मुहि ॥  
 हार परा मै आनि दुआर तुहि ॥ 6 ॥  
 अपना जान करो प्रतिपारा ॥  
 तुम साहिबु मै किंकरु थारा ॥  
 दास जान दै हाथ उबारो ॥  
 हमरे सभ बैरीअन संघारो ॥ 7 ॥  
 प्रिथम धरों भगवत् को ध्याना ॥  
 बहुर करों कविता विधि नाना ॥

क्रिसन जथा मति चरित्र उचारो ॥

चूक होइ कबि लेहु सुधारो ॥ 8 ॥

कबि बाच ॥ ॥ दोहरा ॥

जो निज प्रभ मो सो कहा

सो कहिहौं जग माहि ॥

जो तिह प्रभ को धिआइ हैं

अंत सुरग को जाहिं

॥ 9 ॥

दोहरा ॥

हरि हरि जन दुई एक है

बिब बिचार कछु नाहि ॥

जल ते उपज तरंग जिउ

जल ही बिखै समाहि

॥ 10 ॥

दोहरा ॥ जब आइसु प्रभ को भयो

जनमु धरा जग आइ ॥

अब मै कथा संछेपते

समहूँ कहत सुनाइ

॥ 11 ॥

कबि बाच ॥ दोहरा ॥  
 ठाढ भयो मै जोरि करि  
 बचन कहा सिर निआइ ॥  
 पंथ चलै तब जगत मै  
 जब तुम करहु सहाइ ॥12॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को  
 नित उठि धिए हैं संत ॥  
 अंत लहैंगे मुकत फलु  
 पावहिगे भगवंत ॥13॥

दोहरा ॥

काल पुरख की देहि मो  
 कोटिक बिसन महेस ॥  
 कोटि इंद्र ब्रह्मा किते रवि  
 ससि क्रोर जलेस ॥

दोहरा ॥

तिन बेदीअन की कुल बिखै प्रगटे नानक राइ ॥  
सभ सिखन को सुख दए जह तह भए सहाइ  
॥ 14 ॥

दोहरा ॥

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीआ  
पयान ।। तेग बहादर सी क्रिआ करी न  
किनहूं आन ॥ 15 ॥  
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक ।।  
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक  
॥ 16 ॥

चारणी दोहरा ।। बचित्र नाटक ( 65 )  
जिसनो साजन राखसी दुसमन कवण विचार ॥  
छ्वै न सकै तिह छाहिको निहफल जाइ गवार  
॥ 24 ॥

जोसाधू सरणी परे तिन के कवन विचार ॥ दंत  
जीभ जिम राखि है दुसट अरिसट संघार ॥ 25 ॥

दोहरा ॥

दसम कथा भागौत की भाख करी बनाइ ॥

अवर बासना नाहि प्रभ धरम जुध के चाइ  
दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अटल सभ कोई  
भाखत नेत ॥ सुरग बास रघुबर करा  
सगरी पुरी समेत ॥ ॥ 14 ॥

चौपई ॥

जो इह कथा सुनै अरु गावै ॥

दूख पाप तिह निकट न आवै ॥

बिसन भगत कीए फल होई ॥

आधि ब्याधि छवै सकै न कोई ॥ ॥ 15 ॥

समंत सत्रह सहस पचावन ॥

हाड़ वदी प्रिथम सुख दावन ॥

त्वप्रसादि करि ग्रंथ सुधारा ॥

भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥ ॥ 16 ॥

दोहरा ॥ नेत्र तुंग के चरन तर  
सत्तद्रव तीर तरंग ॥ स्त्री भगवत् पूरन  
कीयो रघुबर कथा प्रसंग ॥१७ ॥

दोहरा ॥

साध असाध जानो नहीं बाद सुबाद बिबाद  
ग्रन्थ सकंल पूरन कीयो भगवत् क्रिपा  
प्रसादि ॥१८ ॥

स्वैया ॥

पाइ गहे जब ते तुमरे  
तब ते कोऊ आँख तरे नहीं आन्यो ॥  
राम रहीम पुरान कुरान  
अनेक कहैं मत एक न मान्यो ॥  
सिंमिति सासत्र बेद सबै  
बहु भेद कहै हम एक न जान्यो ॥  
स्त्री असपान क्रिपा तुमरी करि  
मै न कहयो सभ तोहि बखान्यो ॥१९ ॥

दोहरा ॥ सगल दुआर कउ छाडि कै  
गहिओ तुहारो दुआर ॥  
बांहि गहे की लाज अस  
गोबिंद दास तुहार ॥ 20 ॥

रामकली महला 3 अनंदु  
1 औं सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरु मै  
पाइआ । सतिगुरु त पाइआ सहज सेती  
मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन  
परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥  
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी  
वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ  
सतिगुरु मै पाइआ ॥ ॥ 1 ॥ ए मन मेसिआ तू  
सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू  
मन मेरे दूख सभि विसारणा ॥

| अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि  
 | सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो  
 | किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मन मेरे  
 | सदा रहु हरि नाले ॥ 2 ॥

| साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै  
 | घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु  
 | पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि  
 | वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे  
 | सबद घनेरै ॥ कहै नानकु सचे  
 | साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥ 3 ॥

| साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु  
 | अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥  
 | करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि  
 | इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता  
 | गुरु विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥  
 | कहै नानकु सुणहु संतहु

| सबदि धरहु पिआरो ।। साचा नामु मेरा  
 | आधारो ॥ 4 ॥

| वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ।।  
 | घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि  
 | धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु  
 | कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु  
 | जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥  
 | कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि  
 | अनहद वाजे ॥ 5 ॥

| अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे  
 | पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥  
 | दुख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥  
 | संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥  
 | सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ  
 | भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे  
 | वाजे अनहद तूरे ॥ 40 ॥ 1 ॥

## मुंदावणी महला 5 ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ  
 सतु संतोखु वीचारो ॥  
 अंग्रित नामु ठाकुर का पझओ  
 जिस का सभसु अधारो ॥  
 जे को खावै जे को भुंचै  
 तिस का होइ उधारो ॥  
 एह वसतु तजी नह जाई  
 नित नित रखु उरि धारो ॥  
 तम संसारु चरण लगि तरीऐ  
 सभु नानक ब्रह्म पसारो                  ॥ 1 ॥

## सलोक महला 5 ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ।  
 मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु  
 पझओई ॥ तरसु पझआ मिहरामति होई

सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु  
 मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ ॥ ॥  
 पउड़ी ॥

तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥  
 ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥  
 सुणि कै जम के दूत  
 नाइ तेरै छडि जाहि ॥  
 भउजलु बिखमु असगाहु  
 गुर सबदी पारि पाहि ॥  
 जिन कउ लगी पिआस अंप्रितु सेझ खाहि ।  
 कलि महि एहो पुंजु गुण गोविंद गाहि ॥  
 सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥  
 बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि  
 ॥ ९ ॥

## सलोकु मः ५ ॥

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर  
 नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्वर्णी सुनणा  
 गुर नाउ ॥ सतिगुरु सेती रतिआ दरगह  
 पाईरे ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस  
 नो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम  
 काढीअहि विरले कई केइ ॥ ॥ ॥

मः ५ ॥

रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥  
 गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥  
 होआ आपि दझालु मनहु न विसारिअनु ॥  
 साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥  
 साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥  
 तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥  
 जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि  
 ॥ २ ॥